

पाठ-8 बालगोबनि भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)

"रामवृक्ष बेनीपुरी" का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

जीवन परिचय

रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका जन्म 23 दिसंबर, 1899 को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री भोलानाथ सिंह एक किसान थे, जबकि माता श्रीमती लक्ष्मी देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं।

बचपन से ही बेनीपुरी जी में देशभक्ति और साहित्य के प्रति गहरा लगाव था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और कई बार जेल भी गए। उन्होंने 'यंग इंडिया' और 'तरुण भारत' जैसे पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना फैलाने का कार्य किया।

23 जून, 1968 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं।

साहित्यिक योगदान

रामवृक्ष बेनीपुरी ने हिंदी साहित्य को कहानी, निबंध, नाटक, संस्मरण और यात्रा वृत्तांत जैसी विविध विधाओं में समृद्ध किया। उनकी भाषा सरल, ओजस्वी और जन-जन से जुड़ी हुई थी।

प्रमुख रचनाएँ:

1. निबंध संग्रह:
 - माटी की मूरतें
 - गेहूँ और गुलाब
 - लाल तारा
2. नाटक:
 - अम्बपाली (ऐतिहासिक नाटक)
 - सीता की माँ
3. संस्मरण एवं आत्मकथा:
 - जंजीरें और दीवारें (जेल जीवन के संस्मरण)
 - माटी की मूरतें
4. यात्रा वृत्तांत:

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

➤ पैरों में पंख बाँधकर

साहित्यिक विशेषताएँ:

- राष्ट्रीय भावना: उनकी रचनाओं में देशप्रेम और स्वतंत्रता संग्राम की झलक मिलती है।
- ग्रामीण जीवन का चित्रण: उन्होंने गाँव के साधारण लोगों के जीवन को अपने साहित्य में मुखर किया।
- सामाजिक चेतना: उन्होंने जातिगत भेदभाव, शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज उठाई।

निष्कर्ष

रामवृक्ष बेनीपुरी न केवल एक साहित्यकार, बल्कि एक समाज सुधारक और क्रांतिकारी भी थे। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और युवाओं को देशभक्ति व सामाजिक उत्थान की प्रेरणा देता है।

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबनि भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

उत्तर 1- बालगोबनि भगत खेती से जुड़े हुए गृहस्थ थे, फिर भी उन्हें साधु के रूप में सम्मानित किया जाता था। इसके पीछे उनके चरित्र की कुछ प्रमुख विशेषताएँ थीं-

- वे कबीर को 'साहब' मानते थे और उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाते थे। उनका विश्वास था कि शरीर नश्वर है, लेकिन आत्मा परमात्मा का अंश है।
- वे कबीर द्वारा रचित भजनों को गाते थे।
- वे हमेशा सत्य बोलते थे और अपने व्यवहार में ईमानदारी बनाए रखते थे।
- वे कभी भी किसी अन्य की संपत्ति को नहीं लेते थे।
- जो कुछ भी उनके खेतों में उगता था, उसे वे कबीरपंथी मठ में भेज देते थे। वहां से जो कुछ 'प्रसाद' के रूप में वापस आता, उसी से उनका जीवन चलता था। इस प्रकार, वे अपने सभी साधनों को भगवान के चरणों में अर्पित कर देते थे।

प्रश्न 2. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर 2-

- भगत जी की उम्र बढ़ चुकी थी और उनके घर में केवल उनकी पुत्रवधू ही थी, बाकी कोई नहीं था।
- पुत्रवधू को यह चिंता सता रही थी कि अगर वह भी चली जाती हैं, तो भगत जी के लिए भोजन कौन बनाएगा?
- यदि भगत जी बीमार पड़ जाते हैं, तो उनकी देखभाल कौन करेगा?
- इसलिए, पुत्रवधू यह सोचकर कि भगत जी को जीवन में किसी प्रकार की कठिनाई न हो और वह हमेशा उनकी सेवा कर सकें, उन्हें अकेला छोड़ने का मन नहीं बना पा रही थी।

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

प्रश्न 3. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं ?

उत्तर 3

- अपने बेटे की मृत्यु के बाद भगत अपने शव के पास बैठकर कबीर के भक्ति गीत गाने लगे।
- अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए भगत ने कहा कि यह रोने का समय नहीं है, बल्कि यह तो उत्सव मनाने का अवसर है।
- मृत आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली गई है।
- उन दोनों का मिलन सबसे बड़े आनंद का अनुभव है।
- इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता को व्यक्त किया।

प्रश्न 4. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए ।

उत्तर 4- भगत का व्यक्तित्व और वेशभूषा-

- भगत की उम्र 60 वर्ष से अधिक थी। उनका कद मध्यम और रंग गोरा था। उनके बाल सफेद हो चुके थे, जो उनके चेहरे को एक विशेष चमक देते थे। वे सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनफटी टोपी पहनते थे और कमर में केवल लँगोटी बांधते थे। सर्दियों के मौसम में वे काली कमली ओढ़ते थे। उनके मस्तक पर रामानंदी चंदन का तिलक रहता था, जो नाक के किनारे से शुरू होता था। उनके गले में तुलसी की जड़ों से बनी माला भी रहती थी।
- हालांकि भगत बाहरी रूप से साधु जैसे दिखते थे, वे एक गृहस्थ और किसान थे। लेकिन उनका जीवन और आचार-विचार इतना पवित्र और आदर्शपूर्ण था कि वे एक गृहस्थ होते हुए भी अपने आंतरिक रूप से संन्यासी जैसे थे।

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

उत्तर 5:

- बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के लिए आश्चर्य का कारण इसलिये थी, क्योंकि वे जीवन के नैतिक सिद्धांतों का पूरी तरह से पालन करते हुए उन्हें अपनी दैनिक आदतों में शामिल करते थे।
- उदाहरण के रूप में, उन्होंने कभी किसी की वस्तु नहीं ली, यह उनका कड़ा सिद्धांत था। इस नियम को वे इस हद तक मानते थे कि दूसरों के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते थे। इस प्रकार के आचरण को देखकर लोग चकित रह जाते थे।

प्रश्न 6. पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर 6- गर्मी की उमस भरी शाम में भी भगत का गायन उनकी नियमित दिनचर्या का हिस्सा बन चुका था।

भक्ति गीतों का गायन करते समय वे कभी भी थकान महसूस नहीं करते थे।

- इस प्रकार उनके गायन में स्वरों की ताजगी एक प्रमुख विशेषता थी।
- भगत के गायन में एक निश्चित ताल और गति का पालन किया जाता था।
- उनके स्वर का आरोह श्रोताओं के मन को ऊंचाई की ओर ले जाता था, जिससे लोग अपने शरीर और मन की

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

सुध-बुध खोकर संगीत में पूरी तरह लीन हो जाते थे।

- भगत के स्वर की लहरें श्रोताओं के दिलों को गहरे तरीके से छू जाती थीं।
- ऐसा प्रतीत होता था कि उनका हर शब्द संगीत में खोकर स्वर्ग की ओर उड़ रहा हो।
- भगत का संगीत सुनकर लोग उसी लय और ताल में अपने कार्यों को मन लगाकर करते थे।

प्रश्न 7. कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबनि भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर 7

- कुछ ऐसे संवेदनशील घटनाक्रम हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालगोबनि भगत उन सामाजिक मान्यताओं का विरोध करते थे, जो विवेक के दृष्टिकोण से उचित नहीं थीं।
- जब बालगोबनि भगत के पुत्र का निधन हुआ, तो उन्होंने समाज की परंपराओं के विपरीत, बिना किसी धार्मिक कर्मकांड के अपने पुत्र के श्राद्ध संस्कार संपन्न किए।
- समाज में यह धारणा है कि मृतक को मुखाग्नि केवल पुरुषों द्वारा दी जाती है, लेकिन भगत ने अपनी पुत्रवधू से अपने पुत्र को मुखाग्नि दिलवायी।
- हमारे समाज में विधवा विवाह की स्वीकृति नहीं है, लेकिन बालगोबनि भगत ने अपनी पुत्रवधू को पुनर्विवाह करने की अनुमति दी।

प्रश्न 8. थान को रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत को स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर 8: आषाढ की हल्की बूँदों के बीच खेतों में धान की रोपाई हो रही थी। ठंडी हवाओं के झोंकों के साथ एक संगीत की लहर वातावरण में गूँज रही थी। बालगोबनि भगत का मीठा गायन खेतों में काम कर रहे लोगों के दिलों में सजीवता भरने लगा। उसके स्वर की ऊँचाई के साथ जैसे शब्द स्वर्ग की ओर उड़ते थे। कुछ शब्द धरती पर खड़े लोगों के कानों तक पहुँच रहे थे। बच्चे खेलते हुए भी झूमने लगे। मंड पर खड़ी महिलाएँ अपने होंठ फड़फड़ाती हुई गीत की धुन गुनगुनाने लगीं। हलवाहों के कदम गीत के लय में थिरकने लगे। रोपाई करने वाले लोगों की उँगलियाँ भी संगीत की लय के अनुसार चलने लगीं। बालगोबनि भगत का संगीत संपूर्ण वातावरण में एक जादू सा प्रभाव उत्पन्न कर रहा था। पूरा वातावरण संगीतमय और जीवन से भर गया।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 9. पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबनि भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

उत्तर 9- बालगोबनि भगत की कबीर पर श्रद्धा विभिन्न रूपों में प्रकट हुई है:

1. वेशभूषा: बालगोबनि भगत कबीर के अनुयायी की तरह कमर में लँगोटी पहनते थे और सिर पर कबीरपंथियों जैसी टोपी पहनते थे। उनके माथे पर रामानंदी चंदन लगा रहता था और गले में तुलसी की माला भी रहती थी।

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

2. गृहस्थ जीवन: जैसे कबीर एक गृहस्थ होते हुए भी साधु स्वभाव के थे, वैसे ही बालगोबिन भगत भी गृहस्थ थे। उनके पास खेतीबारी, मकान और एक पुत्र था।
3. भक्तिगीत गायन: बालगोबिन भगत कबीर के लिखे भक्तिगीतों को गाते थे। यह उनकी कबीर के प्रति श्रद्धा को दर्शाता है, क्योंकि वे कबीर के विचारों और भक्ति में गहरी आस्था रखते थे।
4. कबीर के आदर्शों पर चलना: बालगोबिन भगत ने कबीर के उपदेशों का पालन करते हुए जीवन बिताया। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे, सच्चे व्यवहार में विश्वास रखते थे, दूसरों की चीजें नहीं लेते थे, परमात्मा की भक्ति में रहते थे और धार्मिक पाखंडों का विरोध करते थे।
5. आध्यात्मिक दर्शन: बालगोबिन भगत ने कबीर के अद्वितीय आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाया। उन्होंने आत्मा को विरहिणी और परमात्मा को उसका प्रेमी माना, और आत्मा एवं परमात्मा के मिलन को जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य बताया।

प्रश्न 10. आपको दृष्टि में भगत को कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

उत्तर 10: मेरे विचार में, भगत की कबीर के प्रति गहरी श्रद्धा के कुछ प्रमुख कारण यह रहे होंगे:

- कबीर का सरल और आडम्बरमुक्त जीवन
- समाजिक कुरीतियों का विरोध
- इच्छाओं से मुक्त होकर कर्मयोग का पालन
- ईश्वर के प्रति अडिग प्रेम
- भक्ति से प्रेरित मधुर गीतों की रचना
- आदर्शों को अपने जीवन में उतारना

प्रश्न 11. गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?

उत्तर 11:

- ग्रामीण जीवन मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करता है। आषाढ़ माह में खरीफ की फसल की बुआई की जाती है। इस समय लोग लंबे समय तक चली गर्मी से राहत पाने के लिए उत्सुक होते हैं।
- जब आषाढ़ में आकाश में काले बादल घेरने लगते हैं और हल्की-हल्की बारिश की फुहारें गिरने लगती हैं, तो ग्रामीणों के मन में लहलहाती फसलों के सुखद सपने जागने लगते हैं। इस समय पूरे समाज और संस्कृति का माहौल उल्लास से भर जाता है, क्योंकि सब एक समृद्ध भविष्य की आशा में होते हैं।

प्रश्न 12. "ऊपर की तसवीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे।" क्या 'साधु' को पहचान पहनावे के आधार पर की जानी चाहिए? आप किन आधारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि अमुक व्यक्ति 'साधु' है?

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

उत्तर 12-

- साधु की पहचान उसके पहनावे से नहीं करनी चाहिए।
- हम किसी व्यक्ति को 'साधु' समझने का निर्णय उसके आचरण के आधार पर करेंगे।
- यदि व्यक्ति का आचरण सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, त्याग और लोककल्याण से संबंधित है, तो वह सच में साधु है।

प्रश्न 13. मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जोवन को किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करेंगे?

उत्तर 13-

- जब भगत के बेटे की मृत्यु हुई, तो उनकी बहू अत्यधिक शोकित होकर रोने लगी, जबकि भगत पहले की तरह ध्यानमग्न होकर गीत गाने लगे।
- वे अपनी बहू से बोले, "तुम्हें शोक नहीं मनाना चाहिए, बल्कि उत्सव मनाना चाहिए। यह समय आत्मा के परमात्मा से मिलन का है, जो अत्यधिक खुशी का अवसर है।"
- इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि भगत अपने पुत्र से सच्चे प्रेम करते थे, इसलिए वे उसकी आत्मा के परमात्मा से मिलन पर प्रसन्न हो रहे थे, जबकि उनकी बहू मोह के कारण शोकित हो रही थी।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 14, इस पाठ में आए कोई दस क्रिया विशेषण छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी बताइए।

उत्तर 14-

शब्द	क्रियाविशेषण
1. निकट	स्थानवाचक
2. नहीं	रीतिवाचक
3. ऊपर	स्थानवाचक
4. कम	परिमाणवाचक
5. सदा	कालवाचक
6. देर	कालवाचक
7. लगातार	रीतिवाचक
8. ज्यादा	परिमाणवाचक

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

9. नज़दीक स्थानवाचक

10. पास- स्थानवाचक

पाठेतर सक्रियता

• पाठ में ऋतुओं के बहुत ही सुंदर शब्द-चित्र उकेरे गए हैं। बदलते हुए मौसम को दर्शाते हुए चित्र/फोटो का संग्रह कर एक अलबम तैयार कीजिए ।

उत्तर-विद्यार्थी स्वयं करें।

ऋतुओं के बदलते हुए मौसम को दर्शाते हुए एक अलबम तैयार करना एक बहुत ही आकर्षक और रचनात्मक कार्य हो सकता है। इसके लिए आप विभिन्न ऋतुओं के अद्भुत दृश्य और प्राकृतिक सौंदर्य को अपने कैमरे में कैद कर सकते हैं। यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो आपकी मदद कर सकते हैं:

1. वसंत ऋतु (Spring):

- खिलते हुए फूल, रंग-बिरंगे बटरफ्लाई, ताजे पत्ते, और कोमल नवीली घास के चित्र।
- सुबह की हल्की धूप, ठंडी हवा, और नीले आकाश के साथ दृश्य।

2. गर्मी (Summer):

- तेज़ धूप में जलते हुए सूर्य, सूखा परिदृश्य, और गर्म हवा।
- बच्चों का पानी में खेलना, गर्मी से बचने के लिए छांव में बैठना।

3. बरसात (Monsoon):

- बारिश के बाद की हरी-भरी वादियाँ, पानी में बहते हुए झरने और पोखर।
- बादलों से घिरे आकाश, भीगे हुए पेड़-पौधे और बारिश में भीगते लोग।

4. शरद ऋतु (Autumn):

- पत्तों का गिरना, पेड़ की शाखाओं पर सूखे और रंग-बिरंगे पत्ते।
- हल्की ठंडी हवा, सूखा और पीला परिदृश्य।

5. सर्दी (Winter):

- ठंडी सुबह में ओस की बूँदें, बर्फ से ढके हुए दृश्य, और हल्का कोहरा।
- धूप में सिकते हुए लोग, अलाव के पास बैठते लोग।

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

आप अपने कैमरे से इन दृश्यों को कैद करें और उन्हें एक सुंदर अलबम में जोड़ सकते हैं। इसके साथ ही, इन चित्रों के लिए आप छोटे-छोटे कैप्शन भी जोड़ सकते हैं, जो ऋतुओं की विशेषताओं को और भी आकर्षक तरीके से दर्शाएं।

• पाठ में आषाढ, भादो, माघ आदि में विक्रम संवत् कलेंडर के मासों के नाम आए हैं। यह कलेंडर किस माह से आरंभ होता है? महीनों की सूची तैयार कीजिए।

उत्तर: विक्रम संवत्, जो भारतीय पंचांग का मुख्य भाग है, यह कलेण्डर चैत्र माह से शुरू होता है। विक्रम संवत् के महीने और उनके नाम निम्नलिखित हैं:

1. चैत्र (Chaitra) – मार्च-अप्रैल
2. वैशाख (Vaishakh) – अप्रैल-मई
3. ज्येष्ठ (Jyeshtha) – मई-जून
4. आषाढ (Ashadha) – जून-जुलाई
5. श्रावण (Shravana) – जुलाई-अगस्त
6. भाद्रपद (Bhadrapada) – अगस्त-सितंबर
7. आश्वयुज (Ashwayuja) – सितंबर-अक्टूबर
8. कार्तिक (Kartika) – अक्टूबर-नवम्बर
9. मार्गशीर्ष (Margashirsha) – नवम्बर-दिसंबर
10. पौष (Pausha) – दिसंबर-जनवरी
11. माघ (Magha) – जनवरी-फरवरी
12. फाल्गुन (Phalgun) – फरवरी-मार्च

इस प्रकार विक्रम संवत् का प्रारंभ चैत्र माह से होता है।

• कार्तिक के आते ही भगत 'प्रभाती' गाया करते थे। प्रभाती प्रातःकाल गाए जाने वाले गीतों को कहते हैं। प्रभाती गायन का संकलन कीजिए और उसकी संगीतमय प्रस्तुति कीजिए।

उत्तर: आपने सही पहचाना है कि "प्रभाती" प्रातःकाल गाए जाने वाले गीत होते हैं, जो विशेष रूप से धार्मिक और भक्ति भावनाओं से जुड़े होते हैं। कार्तिक माह में, विशेष रूप से, लोग प्रभाती गायन करते हैं, क्योंकि यह माह विशेष रूप से भक्तिपूर्ण माना जाता है। प्रभाती गायन का उद्देश्य सुबह-सुबह ईश्वर के प्रति भक्ति और आस्था को व्यक्त करना होता है।

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

प्रभाती गायन के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. राम प्रभाती:

“जय श्रीराम जय श्रीराम जय जय श्रीराम।

राम के चरणों में बसा है सुख संसार।”

(यह गीत राम के प्रति भक्ति को दर्शाता है और प्रभाती गायन में इसे प्रातःकाल गाया जाता है।)

2. विष्णु प्रभाती:

“नमः श्रीपति सर्वेश्वराय,

तुष्टाय जगतां पालय।”

(इसमें भगवान विष्णु की स्तुति की जाती है, जो संसार के पालनहार माने जाते हैं।)

3. शिव प्रभाती:

“ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।

शिव शंकरा, भूतनाथा, हर हर महादेव।”

(यह प्रभाती भगवान शिव की पूजा अर्चना के लिए गाया जाता है।)

4. कृष्ण प्रभाती:

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी,

हे नाथ नारायण वासुदेव।

(यह गीत भगवान कृष्ण की भक्ति में प्रातःकाल गाया जाता है।)

आप इन गीतों को संगीतमय स्वर में गा सकते हैं, जिसमें विशेष रूप से धीमे, मधुर और आस्था से भरे स्वर का प्रयोग किया जाता है। प्रभाती गायन में प्रायः हल्की ताल और शुद्ध स्वर का प्रयोग होता है ताकि प्रभाती का उद्देश्य पूरी तरह से निखर सके।

• इस पाठ में जो ग्राम्य संस्कृति की झलक मिलती है वह आपके आसपास के वातावरण से कैसे भिन्न है?

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

“ग्राम्य संस्कृति की झलक इस पाठ में प्रकट होती है, जहां परंपराएँ, आस्था और जीवनशैली से जुड़ी आदतें प्रमुख होती हैं। इसमें त्योहारों, भक्ति गीतों, और सामूहिक धार्मिक क्रियाकलापों का महत्व अधिक होता है। ग्रामीण जीवन में प्रकृति से गहरा संबंध होता है, जैसे कृषि, पशुपालन, और साधारण जीवनशैली जो सामाजिक

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

मेल-जोल, सामूहिकता और शांति को बढ़ावा देती है। लोग अपने परिवार, समुदाय और आसपास के लोगों के साथ मिलकर सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं।

जब हम इस ग्राम्य संस्कृति की तुलना अपने आसपास के वातावरण से करते हैं, तो शहरों या अधिक विकसित क्षेत्रों में रहने वाले लोग आमतौर पर जीवन की तेजी और व्यस्तता में खो जाते हैं। यहाँ पर व्यक्ति की प्राथमिकताएँ व्यवसाय, शिक्षा, और व्यक्तिगत उन्नति पर अधिक केंद्रित होती हैं। शहरी जीवन में धार्मिक या सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है, लेकिन उनमें सामूहिक भागीदारी और प्राकृतिक जीवन से जुड़े पहलुओं की कमी होती है। इसके अलावा, शहरी जीवन में भक्ति या परंपराओं का पालन व्यक्तिगत स्तर पर अधिक होता है, न कि सामूहिक रूप से जैसा ग्राम्य संस्कृति में देखा जाता है।

ग्रामीण संस्कृति में प्रकृति से नजदीकी, शांति, और पारिवारिक संबंध अधिक अहम होते हैं, जबकि शहरी वातावरण में व्यस्तता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर दिया जाता है। इस तरह, ग्राम्य और शहरी जीवन में वातावरण और संस्कृति में बुनियादी अंतर होता है।“

पाठ 8: बालगोबनि भगत पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. बालगोबनि भगत का बाह्य स्वरूप कैसा था?

उत्तर: बालगोबनि भगत मँझोले कद के गोरे-चिट्टे व्यक्ति थे, जिनके बाल सफेद हो चुके थे। वे सादगीपूर्ण जीवन जीते थे—कमर में लंगोटी, सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनफटी टोपी, और गले में तुलसी की माला पहनते थे। सर्दियों में वे एक काली कमली ओढ़ लेते थे। उनके मस्तक पर हमेशा रामानंदी चंदन का तिलक चमकता रहता था।

प्रश्न 2. बालगोबनि भगत की दिनचर्या कैसी थी?

उत्तर: बालगोबनि भगत प्रातःकाल बहुत जल्दी उठकर दो मील दूर नदी पर स्नान करने जाते थे। वापस आकर वे गाँव के पोखर के किनारे बैठकर भजन गाते थे। खेती-बाड़ी का काम करने के बाद संध्या के समय वे अपने आँगन में संगीत की महफिल सजाते थे, जिसमें गाँव के लोग शामिल होते थे।

प्रश्न 3. बालगोबनि भगत के संगीत का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता था?

उत्तर: उनका संगीत इतना मोहक था कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे। खेतों में काम करते हुए किसान, बच्चे और महिलाएँ सभी उनके गीतों की लय में खो जाते थे। कभी-कभी तो पूरा वातावरण एक दिव्य आनंद से भर जाता था, मानो संगीत के जादू ने सभी को अपने वश में कर लिया हो।

प्रश्न 4. बेटे की मृत्यु के समय बालगोबनि भगत ने कैसा व्यवहार किया?

उत्तर: अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर भी बालगोबनि भगत ने शोक मनाने के बजाय भजन गाए। उनका मानना था कि आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई है, जो एक आनंदमय घटना है। उन्होंने पतोहू को भी रोने के बजाय उत्सव मनाने के लिए प्रेरित किया और बाद में उसकी दूसरी शादी करवा दी।

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबनि भगत

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर: वृद्धावस्था में भी बालगोबिन भगत नियमित रूप से गंगास्नान के लिए पैदल यात्रा करते थे। एक बार लौटने के बाद उनकी तबीयत खराब हो गई, लेकिन उन्होंने अपने दैनिक भजन-साधना को नहीं छोड़ा। अंतिम दिन भी संध्या आरती के बाद वे शांतिपूर्वक इस संसार से चले गए।

प्रश्न 6. बालगोबिन भगत के चरित्र की सबसे प्रमुख विशेषता क्या थी?

उत्तर: उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी—सरलता, सत्यनिष्ठा और आध्यात्मिक समर्पण। वे गृहस्थ होकर भी साधु जैसा जीवन जीते थे। कबीर के दोहों में उनकी गहरी आस्था थी, और वे हमेशा ईमानदारी व प्रेम से लोगों के बीच रहते थे। उनका संगीत न केवल मनोरंजन का साधन था, बल्कि लोगों के हृदय को शुद्ध करने वाला एक साधन भी था।

प्रश्न 7. बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व में कौन-सी विशेषताएँ उन्हें सामान्य गृहस्थ से अलग बनाती थीं?

उत्तर: बालगोबिन भगत बाह्य रूप से साधारण किसान थे, परंतु उनके विचार और आचरण एक सच्चे संत के समान थे। वे कबीर के अनन्य भक्त थे, जिनके सिद्धांतों पर वह अडिग रहते थे—न झूठ बोलना, न किसी की वस्तु बिना पूछे छूना, और सदैर सत्य बोलना। यहाँ तक कि वह दूसरे के खेत में शौच तक नहीं जाते थे। उनकी यह सूक्ष्म सच्चाई और आत्मानुशासन उन्हें विशिष्ट बनाता था।

प्रश्न 8. बालगोबिन भगत के संगीत में ऐसा क्या जादू था कि पूरा गाँव उसके प्रभाव में आ जाता था?

उत्तर: उनका संगीत केवल स्वरों का मेल नहीं, बल्कि भक्ति और शुद्धता की अभिव्यक्ति था। जब वह आषाढ की रिमझिम में खेतों में गाते, तो उनके स्वर प्रकृति के साथ एकाकार हो जाते। बच्चे झूमने लगते, औरतें गुनगुनाने लगतीं, और किसानों के हाथ-पैर स्वयं ही ताल से थिरकने लगते। यह संगीत नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभूति थी, जो सुनने वालों के मन को छू लेती थी।

प्रश्न 9. बेटे की मृत्यु पर उन्होंने आनंद क्यों मनाया? क्या यह उनकी संवेदनहीनता थी?

उत्तर: बिल्कुल नहीं। बालगोबिन भगत की प्रतिक्रिया संवेदनहीनता नहीं, बल्कि गहरी आध्यात्मिक समझ का परिणाम थी। उनका मानना था कि मृत्यु शरीर का अंत है, आत्मा का नहीं। वह मानते थे कि उनका बेटा परमात्मा में विलीन हो गया है, जो एक सच्चे भक्त के लिए सर्वोच्च आनंद की बात है। इसलिए उन्होंने पतोहू को भी रोने के बजाय इस "मिलन" को उत्सव की तरह मनाने को कहा।

प्रश्न 10. बालगोबिन भगत ने अपनी पतोहू को दूसरी शादी के लिए क्यों विवश किया?

उत्तर: उनका यह निर्णय उनकी निस्वार्थता और दूरदर्शिता को दर्शाता है। वह नहीं चाहते थे कि उनकी पतोहू उनके बुढ़ापे की देखभाल में अपना जीवन बर्बाद करे। उन्होंने कहा— "तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़ दूँगा।" यह उनकी परोपकारिता थी कि उन्होंने स्वार्थ से ऊपर उठकर उसके भविष्य के बारे में सोचा।

प्रश्न 11. उनकी मृत्यु कब और कैसे हुई? क्या यह उनके जीवनशैली के अनुरूप थी?

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबिनि भगत

उत्तर: बालगोबिनि भगत की मृत्यु भी उनके सादगीपूर्ण और अनुशासित जीवन की तरह शांत थी। वृद्धावस्था में भी वह गंगास्नान के लिए पैदल यात्रा करते रहे। अंतिम दिनों में बुखार होने पर भी उन्होंने भजन-कीर्तन नहीं छोड़ा। एक शाम तक गाते-गाते अगली भोर तक वह इस संसार से चले गए—बिना किसी शोर-शराबे के, जैसे एक दीपक तेल खत्म होने पर बुझ जाता है।

प्रश्न 12. आज के समय में बालगोबिनि भगत का चरित्र किस प्रकार प्रासंगिक है?

उत्तर: आज के भौतिकवादी युग में, जहाँ लोग धन और सुख के पीछे भाग रहे हैं, बालगोबिनि भगत का जीवन सरलता, सच्चाई और आत्मसंयम का संदेश देता है। उनका संगीत हमें सिखाता है कि खुशी बाहरी चीजों में नहीं, बल्कि मन की शुद्धता में है। उनकी मृत्यु-दृष्टि हमें जीवन के प्रति एक गहरा दर्शन देती है—मृत्यु से डरना नहीं, बल्कि उसे जीवन का अटल सत्य मानकर जीना चाहिए।

प्रश्न 13. बालगोबिनि भगत के जीवन में कबीर के दोहों की क्या भूमिका थी?

उत्तर: कबीर के दोहे बालगोबिनि भगत के जीवन के मार्गदर्शक थे। वे कबीर को 'साहब' मानते थे और उनके हर आदेश का पालन करते थे। उनके गीतों में कबीर की वाणी की गूँज स्पष्ट सुनाई देती थी। कबीर की तरह ही वे बाहरी आडंबरों से दूर, सीधे-सादे जीवन में विश्वास रखते थे। उनका पूरा जीवन कबीर के 'साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय' वाले सिद्धांत का जीवंत उदाहरण था।

प्रश्न 14. बालगोबिनि भगत की दिनचर्या से हम आज के व्यस्त जीवन में क्या सीख सकते हैं?

उत्तर: उनकी दिनचर्या से हम तीन मूल्यवान सबक ले सकते हैं:

1. प्रातःकाल उठकर प्रकृति से जुड़ना
2. कर्मयोगी भाव से काम करना
3. संध्या समय सामूहिक संगीत के माध्यम से आत्मिक शांति प्राप्त करना

आज के तनावभरे जीवन में यह सरल दिनचर्या मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य का सुनहरा फॉर्मूला साबित हो सकती है।

प्रश्न 15. बालगोबिनि भगत के संगीत में कौन-सी विशेषताएँ उसे सामान्य लोकगीतों से अलग बनाती थीं?

उत्तर: उनके संगीत की चार विशिष्ट विशेषताएँ थीं:

1. भक्ति और श्रद्धा की गहन अनुभूति
2. शब्दों और स्वरों का पूर्ण सामंजस्य
3. श्रोताओं को तुरंत अपने प्रवाह में बहा लेने की क्षमता
4. प्रकृति की ध्वनियों के साथ एकात्मकता

Ncert Solutions of पाठ-8 बालगोबिनि भगत

यही कारण था कि उनका संगीत सुनकर लोगों को लगता था मानो स्वर्गिक अनुभूति हो रही हो।

प्रश्न 16. बालगोबिनि भगत के जीवन से हम आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए क्या प्रेरणा ले सकते हैं?

उत्तर: उनके जीवन से हमें शिक्षा के तीन नए आयाम मिलते हैं:

1. जीवन शिक्षा का सबसे बड़ा विद्यालय है
2. संगीत और कला मनुष्य को संपूर्ण बनाती है
3. नैतिक मूल्यों की शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है

आज की शिक्षा प्रणाली यदि बालगोबिनि भगत के इन सिद्धांतों को अपनाए, तो वह अधिक संतुलित और सार्थक बन सकती है।

प्रश्न 17. बालगोबिनि भगत के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना क्या थी?

उत्तर: उनके जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह थी कि वे गृहस्थ होकर भी साधु थे, और साधु जैसा जीवन जीने के बावजूद गृहस्थ थे। समाज उन्हें पूरी तरह न तो साधु मानता था, न ही सामान्य गृहस्थ। परंतु यही विडंबना उन्हें एक अनूठा व्यक्तित्व बनाती थी - समाज के बीच रहकर भी समाज से ऊपर।

प्रश्न 18. क्या बालगोबिनि भगत को आधुनिक अर्थों में एक सफल व्यक्ति माना जा सकता है?

उत्तर: पारंपरिक सफलता के मापदंडों से हटकर देखें तो बालगोबिनि भगत अत्यंत सफल व्यक्ति थे। उन्होंने:

1. आत्मनिर्भर जीवन जिया
2. समाज में सम्मान प्राप्त किया
3. अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे
4. एक सार्थक विरासत छोड़ी

वास्तविक सफलता का यही तो मापदंड होना चाहिए, न कि धन और पद की प्राप्ति।